हफ़्तावार रिसाला : 409
Weekly Booklet : 409

Tafseer e Noorul Irfan Se 105 Madani Phool (Qist - 5) (Hindi)

"तफ़्सीरे नूरुल इरफ़ान"

से 105 मदनी फूल (क़िस्त : 5)

सफ़हात : 19

बुरों से बेज़ारी सुन्नते अम्बिया है 03
रात को आराम करना भी इबादत है जब कि... 06
इस्लाम में किसी को ज़िन्दा जलाना मना है 11
ज़कात न देने से बारिश रुकती है 16

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ ط
اَمَّا بَعْدُ ! فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

"तफ़्सीरे नूरुल इरफ़ान से 105 मदनी फूल (क़िस्त : 5)

दुआए अ़त्तार : या **अल्लाह** पाक ! जो कोई 19 सफ़्हात का रिसाला "तफ़्सीरे नूरुल इरफ़ान से 105 मदनी फूल (क़िस्त : 5)" पढ़ या सुन ले उसे कुरआने करीम की तिलावत का शौक़ अ़ता फ़रमा और उस को मां बाप समेत और ख़ानदान समेत जन्नतुल फ़िरदौस में बे हिसाब दाख़िला अ़ता फ़रमा । اٰمین بِجاہِ خاتَمِ النَّبِیّٖن صلّی اللّٰہُ علیہِ واٰلہٖ وسلّم

दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत

फ़रमाने आख़िरी नबी صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم **:** "اَكْثِرُوا الصَّلَاةَ عَلَيَّ يَوْمَ الْجُمُعَةِ, فَاِنَّهٗ مَشْهُوْدٌ تَشْهَدُهُ الْمَلَائِكَةُ وَاِنَّ اَحَدًا لَنْ يُّصَلِّيَ عَلَيَّ اِلَّا عُرِضَتْ عَلَيَّ صَلَاتُهٗ حَتّٰى يَفْرُغَ مِنْهَا यानी जुमुआ़ के दिन मुझ पर कसरत से दुरूद भेजा करो क्यूंकि येह यौमे मश्हूद (यानी मेरी बारगाह में फ़िरिश्तों की ख़ुसूसी ह़ाज़िरी का दिन) है, उस दिन फ़िरिश्ते (ख़ुसूसी त़ौर पर कसरत से मेरी बारगाह में) ह़ाज़िर होते हैं, जब कोई शख़्स मुझ पर दुरूद भेजता है तो उस के फ़ारिग़ होने तक उस का दुरूद मेरे सामने पेश कर दिया जाता है ।" ह़ज़रते अबू दर्दा رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ का बयान है कि मैं ने अ़र्ज़ की : (या रसूलल्लाह !) और आप के विसाल के बाद क्या होगा ? इरशाद फ़रमाया : "हां ! (मेरी ज़ाहिरी) वफ़ात के बाद भी (मेरे सामने इसी त़रह़ पेश किया जाएगा) ।" "اِنَّ اللّٰهَ حَرَّمَ عَلَى

اِنَّ اللّٰہَ حَرَّمَ عَلَی الْاَرْضِ اَنْ تَاْکُلَ اَجْسَادَ الْاَنْبِیَاءِ, यानी **अल्लाह** पाक ने ज़मीन के लिये अम्बियाए किराम عَلَیْہِمُ السَّلَام के जिस्मों का खाना ह़राम कर दिया है।" فَنَبِیُّ اللّٰہِ حَیٌّ یُرْزَقُ, पस **अल्लाह** पाक का नबी ज़िन्दा होता है और उसे रिज़्क़ भी अ़ता किया जाता है।" (ابن ماجہ،2/291،حدیث:1637)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ عَلٰی مُحَمَّد

"सूरत्तुशुअ़रा" से ह़ासिल होने वाली 14 ख़ूबसूरत बातें

﴾1﴿ हुज़ूर (صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) को ता क़ियामत हमारे गुनाहों पर सदमा होता है। (तफ़्सीरे नूरुल इरफ़ान, स. 813)

﴾2﴿ जिस जगह पैग़म्बर की क़ब्र हो वहां अ़ज़ाबे इलाही नहीं आ सकता। मिस्र में यूसुफ़ عَلَیْہِ السَّلَام और आप के भाइयों की क़ब्रें थीं इसी लिये फ़िरऔ़न पर वहां रह कर अ़ज़ाब न आया बल्कि बाहर निकाल कर। दूसरी क़ौमों पर उन की बस्तियों में ही अ़ज़ाब आ गया, मिस्र मह़फ़ूज़ रहा उन बुज़ुर्गों की बरकत से। (तफ़्सीरे नूरुल इरफ़ान, स. 444)

﴾3﴿ अहले मिस्र में सिर्फ़ तीन ह़ज़रात ईमान लाए : ह़ज़रते आसिया (رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہَا) फ़िरऔ़न की ज़ौजा, ह़ज़रते ख़िरबील (رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ) आले फ़िरऔ़न का मोमिन और बीबी मरयम बिन्ते नामूशा (رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہَا), जिन्हों ने ह़ज़रते यूसुफ़ عَلَیْہِ السَّلَام की क़ब्र शरीफ़ का पता मूसा عَلَیْہِ السَّلَام को दिया। (तफ़्सीरे नूरुल इरफ़ान, स. 814)

﴾4﴿ जो सलामत दिल ले कर रब के हुज़ूर ह़ाज़िर हुवा उस का माल भी काम आएगा और औलाद भी। सलामतिये दिल से मुराद दिल का बद अ़क़ीदगियों से पाक होना। (तफ़्सीरे नूरुल इरफ़ान, स. 814)

﴾5﴿ इब्राहीम عَلَیْہِ السَّلَام की क़ौम में बहुत ही थोड़े आप पर ईमान लाए, अक्सर बे ईमान रहे। (तफ़्सीरे नूरुल इरफ़ान, स. 446)

﴾6﴿ हुज़ूर (صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) ने ता क़ियामत अपनी औलाद के लिये ज़कात लेना ह़राम फ़रमाया। यानी उन के अमीरों पर ज़कात देना फ़र्ज़ है मगर उन के ग़रीबों पर लेना ह़राम ताकि कोई येह न कह सके कि ज़कात औलाद की परवरिश के लिये बनाई गई है। (तफ़्सीरे नूरुल इरफ़ान, स. 446)

﴾7﴿ मोमिन को कमीन (यानी कमीना) कहना, रज़ील समझना कुफ़्फ़ार का काम है। कोई मोमिन कमीन नहीं, सब शरीफ़ हैं। (तफ़्सीरे नूरुल इरफ़ान, स. 446)

﴾8﴿ अम्बियाए किराम (عَلَيْهِمُ السَّلَام) क़ौम को पहले अपनी पहचान कराते थे फिर **अल्लाह** तआ़ला और तमाम दीनी उमूर की। हमारे हुज़ूर (صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) ने सब से पहली तब्लीग़ में येह ही पूछा : बताओ मैं कैसा हूं ? क्यूंकि नबी की पहचान पर ईमान मौक़ूफ़ है।

(तफ़्सीरे नूरुल इरफ़ान, स. 447)

﴾9﴿ बुरों से बेज़ारी सुन्नते अम्बिया है। (तफ़्सीरे नूरुल इरफ़ान, स. 449)

﴾10﴿ नबी का तक़र्रुर रब के इन्तिख़ाब से होता है, इसी लिये उन की उजरत मख़्लूक़ के ज़िम्मे नहीं। ख़लीफ़ा का तक़र्रुर क़ौम के इन्तिख़ाब से है, इसी लिये क़ौम के ज़िम्मे उन की माली ख़िदमत है। ख़ुलफ़ाए राशिदीन (عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان) ने ख़िलाफ़त पर उजरत ली, सिवाए उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللهُ عَنْه के।

(तफ़्सीरे नूरुल इरफ़ान, स. 450)

﴾11﴿ उ़लमा का दर्जा बहुत बुलन्द है कि रब ने उन्हें क़ुरआन की ह़क़्क़ानिय्यत की गवाही के लिये चुना। (तफ़्सीरे नूरुल इरफ़ान, स. 815)

﴾12﴿ पांच सूबों के मज्मूए़ का नाम अ़रब है, बाक़ी तमाम रूए ज़मीन अ़जम है। ह़िजाज़, इ़राक़, नज्द, बह़रैन, यमन। (तफ़्सीरे नूरुल इरफ़ान, स. 451)

﴾13﴿ मुबल्लिग़ को चाहिये कि पहले अपने अ़ज़ीज़ों को तब्लीग़ करे फिर दीगर लोगों को वरना तब्लीग़ असर न करेगी, इसी लिये हुज़ूर

صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने पहले ख़ास अपने अ़ज़ीज़ों को तब्लीग़ फ़रमाई फिर आ़म लोगों को। तरतीबे तब्लीग़ येही आला है। (तफ़्सीरे नूरुल इरफ़ान, स. 451)

﴾14﴿ हमेशा रब की नज़र (यानी रह़मत) अपने ह़बीब (صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) पर है जो ह़बीब के क़दम से लिपट जाए वोह भी मन्ज़ूरे नज़रे इलाही हो जाए। (तफ़्सीरे नूरुल इरफ़ान, स. 815)

"सूरतुन्नम्ल" से ह़ासिल होने वाली 13 ख़ूबसूरत बातें

﴾1﴿ **अल्लाह** के नेक बन्दे मुबारक (यानी बरकत वाले) होते हैं। अच्छे मक़ाम के रहने वाले मोमिन भी मुबारक हैं। हम से मदीनए मुनव्वरा के मुसलमान मुबारक हैं। (तफ़्सीरे नूरुल इरफ़ान, स. 453)

﴾2﴿ च्यूंटी का भी येह अ़क़ीदा है कि पैग़म्बर के सह़ाबा किसी पर ज़ुल्म नहीं करते। (तफ़्सीरे नूरुल इरफ़ान, स. 454)

﴾3﴿ ह़ज़रते सुलैमान عَلَيْهِ السَّلَام का हुद हुद पैग़म्बर की सोह़बत की बरकत से अ़क़ाइदो आमाल से ख़बरदार था। जो हुज़ूर (صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) के सह़ाबा को ईमान पर न माने वोह हुज़ूर (صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) का फ़ैज़ ह़ज़रते सुलैमान (عَلَيْهِ السَّلَام) से भी कम मानता है कि ह़ज़रते सुलैमान عَلَيْهِ السَّلَام का सोह़बत याफ़्ता जानवर भी मोमिन था और हुज़ूर (صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) के सोह़बत याफ़्ता इन्सान भी मोमिन न हों! مَعَاذَاللہ। (तफ़्सीरे नूरुल इरफ़ान, स. 455)

﴾4﴿ ह़ाकिम का फ़ैसला तह़क़ीक़ात पर होता है न कि अपने कश्फ़ और इ़ल्मे लदुन्नी पर। रब्बे करीम भी क़ियामत में गवाही वग़ैरा के ज़रीए तह़क़ीकात फ़रमा कर फ़ैसला करेगा। (तफ़्सीरे नूरुल इरफ़ान, स. 455)

﴾5﴿ बिस्मिल्लाह से काम शुरूअ़ करने का नतीजा कामयाबी है कि ह़ज़रते सुलैमान (عَلَيْهِ السَّلَام) को इस की बरकत से बिल्क़ीस जैसी बीवी अ़ता हुई। (तफ़्सीरे नूरुल इरफ़ान, स. 455)

﴾6﴿ **अल्लाह** वालों के दिल में दुन्यावी मालो मताअ़ की कोई क़द्रो मन्ज़िलत नहीं है, न वोह इस पर फ़ख़्र करते हैं। इस फ़ानी चीज़ के आने पर क्या ख़ुशी और जाने पर क्या ग़म ! **अल्लाह** पाक दाइमी ख़ुशी नसीब फ़रमाए, आमीन। (तफ़्सीरे नूरुल इरफ़ान, स. 456)

﴾7﴿ **अल्लाह** के मक़्बूल बन्दे नेमतों को भी आज़माइश ही समझते हैं, कभी फ़ख़्र नहीं करते। (तफ़्सीरे नूरुल इरफ़ान, स. 816)

﴾8﴿ जिस से निकाह़ करना हो उस की अ़क़्ल, समझ (और) दानाई की तह़क़ीक़ करना बेहतर है। (तफ़्सीरे नूरुल इरफ़ान, स. 457)

﴾9﴿ बिल्क़ीस मुसलमान हो कर ह़ज़रते सुलैमान (عَلَيْهِ السَّلَام) के निकाह़ में आई, इस के शिकम से दावूद बिन सुलैमान पैदा हुए जो ह़ज़रते सुलैमान (عَلَيْهِ السَّلَام) की ज़िन्दगी शरीफ़ में वफ़ात पा गए। ह़ज़रते सुलैमान (عَلَيْهِ السَّلَام) 13 बरस की उ़म्र में तख़्ते सल्त़नत पर जल्वा अफ़रोज़ हुए और 53 बरस की उ़म्र शरीफ़ में वफ़ात पाई, चालीस साल सल्त़नत की। आप की वफ़ात ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام की वफ़ात से 575 बरस बाद हुई और आप की वफ़ात के एक माह बाद बिल्क़ीस (رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهَا) ने वफ़ात पाई।

(तफ़्सीरे नूरुल इरफ़ान, स. 457)

﴾10﴿ रब्बे करीम बे क़रार की दुआ़ बहुत क़बूल करता है, दुआ़ की क़बूलिय्यत की शराइत़ में से बे क़रारी भी एक शर्त़ है, इसी लिये हुक्म है कि बे क़रारों से अपने लिये दुआ़ कराओ। मुसाफ़िरों, बीमारों, मज़्लूमों, मक़रूज़ों की दुआ़ क़बूलिय्यत के क़रीब होती है।

(तफ़्सीरे नूरुल इरफ़ान, स. 459)

﴾11﴿ जो क़ियामत या मौत की तय्यारी न करे वोह क़ियामत से अन्धा है।

(तफ़्सीरे नूरुल इरफ़ान, स. 460)

﴾12﴿ रात को आराम करना भी इबादत है अगर निय्यत ख़ैर से हो। (तफ़्सीरे नूरुल इरफ़ान, स. 817)

﴾13﴿ हर हक़दार का हक़ अदा करना चाहिये, इबादतो रियाज़त रूह का हक़ है, आराम नफ़्स का हक़ है, दोनों हक़ अदा करने का हुक्म है, मगर जैसे दिन में कुछ आराम किया जाता है ऐसी ही रात में कुछ इबादत करनी चाहिये। (तफ़्सीरे नूरुल इरफ़ान, स. 817)

"सूरतुल क़सस" से हासिल होने वाली 26 खूबसूरत बातें

﴾1﴿ फ़िरऔन ने बनी इसराईल के नव्वे हज़ार (90,000) बच्चे बे क़ुसूर ज़ब्ह कर दिये। (तफ़्सीरे नूरुल इरफ़ान, स. 463)

﴾2﴿ फ़िरऔन की बीवी का नाम शरीफ़ हज़रते आसिया बिन्ते मुज़ाहिम बिन उबैद बिन रय्यान बिन वलीद है येह रय्यान बिन वलीद वोही है जो यूसुफ़ عَلَيْهِ السَّلَام के ज़माने में बादशाहे मिस्र था। (तफ़्सीरे नूरुल इरफ़ान, स. 464)

﴾3﴿ पैग़म्बर के मोजिज़े कभी बचपन शरीफ़ में भी ज़ाहिर होते हैं, मूसा عَلَيْهِ السَّلَام का अपनी मां के सिवा किसी दाई का दूध न पीना आप का मोजिज़ा हुवा, उसे इरहास कहा जाता है जैसे ईसा عَلَيْهِ السَّلَام का बचपन में कलाम फ़रमाना। (तफ़्सीरे नूरुल इरफ़ान, स. 464)

﴾4﴿ नेक आमाल की बरकत से **अल्लाह** पाक की तरफ़ से इल्मे कामिल मिलता है और आलिम के अमल में बरकत होती है, उलमा को चाहिये कि आमाले सालिहा किया करें। (तफ़्सीरे नूरुल इरफ़ान, स. 818)

﴾5﴿ **अल्लाह** पाक पैग़म्बरों को रूहानी ताक़त के साथ जिस्मानी ताक़त भी कामिल अता फ़रमाता है, उन की क़ुव्वत फ़िरिश्तों से भी ज़ियादा होती है। (तफ़्सीरे नूरुल इरफ़ान, स. 465)

﴾6﴿ ख़तरनाक जगह से निकल जाना और जान बचाने की तदबीर करना सुन्नते अम्बिया है। (तफ़्सीरे नूरुल इरफ़ान, स. 466)

﴾7﴿ अगर औ़रत ज़रूरतन बाहर जाए तो मर्दों से अ़लाह़दा रहे भीड़ में दाख़िल न हो। (तफ़्सीरे नूरुल इरफ़ान, स. 466)

﴾8﴿ अगर्चे सुन्नत येह है कि पैग़ामे निकाह़ लड़के की त़रफ़ से हो लेकिन येह भी जाइज़ है कि लड़की वालों की त़रफ़ से हो। (तफ़्सीरे नूरुल इरफ़ान, स. 467)

﴾9﴿ त़ाक़ते लिसानी (Speaking Power) **अल्लाह** की बड़ी नेमत है अगर तक़्वा के साथ हो, बिग़ैर तक़्वा अ़ज़ाब है। (तफ़्सीरे नूरुल इरफ़ान, स. 468)

﴾10﴿ मुबारक है वोह जो बुज़ुर्गों के कहने से दुरुस्त हो जाए। मन्हूस है वोह जिसे ज़माना दुरुस्त करे। (तफ़्सीरे नूरुल इरफ़ान, स. 819)

﴾11﴿ पुख़्ता ईंट फ़िरऔ़न ने ईजाद की और कुफ़्फ़ार की ईजाद से फ़ाएदा उठाना जाइज़ है, आज दुन्या पुख़्ता ईंटों, रेल और तार वग़ैरा से फ़ाएदा उठा रही है। (तफ़्सीरे नूरुल इरफ़ान, स. 469)

﴾12﴿ कुफ़्फ़ार के कुफ़्रो अ़ज़ाब में ग़ौर करना हुक्मे इलाही है, (येह भी) इ़बादत है। (तफ़्सीरे नूरुल इरफ़ान, स. 469)

निगाहे मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के कमालात

﴾13﴿ नबी की निगाह गुज़श्ता, आइन्दा, मौजूदा, मादूम सब को देख लेती है। हुज़ूर (صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) ने मेराज की रात उन लोगों को दोज़ख़ में अ़ज़ाब पाते देखा जो हुज़ूर (صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) की वफ़ात के सदहा साल बाद पैदा होंगे और बादे क़ियामत अ़ज़ाब पाएंगे। ह़ज़रते जिब्रील (عَلَيْهِ السَّلَام) अ़र्ज़ करते थे कि येह आप की उम्मत के सूद ख़्वार (यानी सूद खाने वाला) हैं।

(तफ़्सीरे नूरुल इरफ़ान, स. 469)

﴾14﴿ दुन्या में किसी का बुरा चर्चा, **अल्लाह** की लानत है और अच्छा चर्चा **अल्लाह** की रह़मत है जैसा कि अम्बिया, औलिया, सालिह़ीन का हो रहा है और शैत़ान की बुरी शोहरत उस के लिये लानत है ह़त्ता कि कुफ़्फ़ार

भी शैतान की बदनामी से वाक़िफ़ हैं क्यूंकि अगर उन्हें कोई शैतान कह दे तो उसे गाली समझते हैं। (तफ़्सीरे नूरुल इरफ़ान, स. 469)

﴾15﴿ गुज़श्ता अम्बिया के दीन उन के कुछ अ़र्से के बाद मिट जाते थे येह हमारे हुज़ूर (صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) ही की शान है कि इतनी दराज़ मुद्दत गुज़रने के बा वुजूद हुज़ूर (صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) का दीन क़ाइम है, क़ुरआन वैसे ही मौजूद है। (तफ़्सीरे नूरुल इरफ़ान, स. 469)

﴾16﴿ हिजाज़े अ़रब में हुज़ूर (صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) से पहले कोई नबी सिवाए हज़रते इस्माईल عَلَيْهِ السَّلَام के न आया। जिस आस्मान पर सूरज होता है वहां कोई तारा नहीं होता। (तफ़्सीरे नूरुल इरफ़ान, स. 470)

﴾17﴿ मक्कए मुअ़ज़्ज़मा में पैदावार कुछ नहीं मगर हर त़रफ़ से रिज़्क़ खिंच कर यहां पहुंचता है। जब काबे के दामन में रहने की बरकत से उन्हें अम्न और रिज़्क़ मिल रहा है तो अगर येह काबे वाले महबूब صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के दामने करम से वाबस्ता हो जाएं तो उस से बढ़ कर अम्न और रोज़ी पाएंगे। काबा ह़रमे अज्साम है, हुज़ूर (صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) ह़रमे ईमान हैं जहां ज़ातो सिफ़ात के फल आते हैं। (तफ़्सीरे नूरुल इरफ़ान, स. 820)

﴾18﴿ बारगाहे इलाही में सब ही पेश होंगे मगर मोमिन ख़ुद ख़ुशी से ह़ाज़िर होंगे और कुफ़्फ़ार जबरन ह़ाज़िर किये जाएंगे जैसे फांसी के मुजरिम ह़ाकिम के सामने पेश किये जाते हैं। (तफ़्सीरे नूरुल इरफ़ान, स. 472)

﴾19﴿ ईमानी तअ़ल्लुक़ात क़ियामत में भी क़ाइम रहेंगे, नफ़्सानी तअ़ल्लुक़ात टूट जाएंगे। (तफ़्सीरे नूरुल इरफ़ान, स. 820)

﴾20﴿ मोमिन को अपना दीन क़ब्र में ह़श्र में हर जगह याद रहेगा, वोह अपने रब को, अपने नबी को बल्कि अपने शैख़ और उस्ताद को भी पहचानेगा। (तफ़्सीरे नूरुल इरफ़ान, स. 820)

﴾21﴿ नुबुव्वत नियाबते इलाहिय्या से है जिस का इन्तिख़ाब सिर्फ़ रब फ़रमाता है और ख़िलाफ़त नियाबते रसूल है इस का इन्तिख़ाब रसूल फ़रमाएं या रसूल की उम्मत, कसरते राय से। अगर ख़लीफ़ा भी रब के इन्तिख़ाब से हुवा करे तो नबी और ख़लीफ़ा में फ़र्क़ न रहेगा।

(तफ़्सीरे नूरुल इरफ़ान, स. 473)

﴾22﴿ हुज़ूर (صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) की किसी चीज़ पर त़ान कुफ़्र है क्यूंकि हुज़ूर (صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) का हर काम हर वस्फ़ रब्बे करीम के इन्तिख़ाब से है, अब इस पर एतिराज़ रब के इन्तिख़ाब पर एतिराज़ है।

(तफ़्सीरे नूरुल इरफ़ान, स. 473)

﴾23﴿ क़ारून, ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام के चचा यसहर का बेटा था, तौरात का बड़ा आ़लिम था, बहुत ह़सीन, मुतवाज़ेअ़, ख़ुश ख़ुल्क़ था, माल मिलने पर मुनाफ़िक़ हो गया। (तफ़्सीरे नूरुल इरफ़ान, स. 474)

﴾24﴿ जुर्म कर के ख़ुश होना ह़राम है, इ़बादत कर के ख़ुश होना बेहतर है। इसी त़रह़ नाजाइज़ त़रीक़े से ख़ुशी मनाना ह़राम है जैसे ख़ुशी से नाचना। जाइज़ त़ौर से ख़ुशी मनाना अच्छा है जैसे ख़ुशी में सदक़ा करना वग़ैरा।

(तफ़्सीरे नूरुल इरफ़ान, स. 474)

﴾25﴿ दुन्या दारों की दुन्या को लालच की नज़र से देखना और उन की दुन्या की तमन्ना करना ग़ाफ़िलों का काम है। दुन्या में अपने से नीचे को देखे, दीन में अपने से ऊपर पर नज़र करे। (तफ़्सीरे नूरुल इरफ़ान, स. 475)

﴾26﴿ एक भलाई का बदला कम अज़ कम दस गुना, ज़ियादा की इन्तिहा नहीं, फिर वोह दाइमी है जिस को फ़ना नहीं और दीदारे इलाही और लिक़ाए जमाले मुस्त़फ़ा (यानी प्यारे आक़ा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ज़ियारत) इस के इ़लावा है। (तफ़्सीरे नूरुल इरफ़ान, स. 820)

"सूरतुल अ़न्कबूत" से ह़ासिल होने वाली 25 ख़ूबसूरत बातें

﴾1﴿ मोमिन बि फ़ज़्लिही तआ़ला दुन्या ही में रुजूअ़ इलल्लाह (यानी **अल्लाह** पाक की त़रफ़ रुजूअ़) कर लेते हैं। (तफ़्सीरे नूरुल इ़रफ़ान, स. 476)

﴾2﴿ मुसलमानों का ब क़द्रे कुव्वते ईमानी के इम्तिह़ान लेना, क़ानूने इलाही है। बीमारी, नादारी, ग़ुर्बत, मुसीबत, येह सब रब की आज़्माइशें हैं जिन से मुख़्लिस व मुनाफ़िक़ मुम्ताज़ (यानी वाज़ेह़) हो जाते हैं। मोमिन राज़ी ब रिज़ा रहता है। (तफ़्सीरे नूरुल इ़रफ़ान, स. 820)

﴾3﴿ आज़्माइशों का मक़्सद येह है कि कल क़ियामत में किसी की सज़ा या जज़ा पर दूसरों को एतिराज़ न हो मसलन इमामे हुसैन (رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ) को जब अहले जन्नत की सरदारी दी जाए तो दूसरा ये न कह सके कि हमें सरदारी क्यूं न मिली ? करबला (के इम्तिह़ान) ने उन का (जन्नती नौजवानों की सरदारी का) इस्तिह़क़ाक़ ज़ाहिर कर दिया। (तफ़्सीरे नूरुल इ़रफ़ान, स. 821)

﴾4﴿ जिसे उम्मीद हो कि मैं ह़क़ तआ़ला की बारगाह में पेश होऊंगा और वोह मेरे गुनाह बख़्श देगा तो उस की येह उम्मीद ह़क़ है, वाक़ेई वोह ग़फ़ूर रह़ीम (यानी बख़्शने वाला बड़ा मेहरबान) है। (तफ़्सीरे नूरुल इ़रफ़ान, स. 477)

﴾5﴿ नूह़ عَلَیْہِ السَّلَام दुन्या में चौथे नबी हैं। आप का नाम शरीफ़ अ़ब्दुल ग़फ़्फ़ार या यश्कुर या शाकिर है, ख़ौफ़े इलाही में ज़ियादा रोने की वज्ह से नूह़ आप का लक़ब हुवा। आप की विलादत आदम عَلَیْہِ السَّلَام के दुन्या में तशरीफ़ लाने के सोलह सौ बीस (1620) बरस के बाद सवाद, इराक़ में हुई। साढ़े नौ सौ साल तब्लीग़ फ़रमाई, मगर 72 आदमी बाहर के और 8 आदमी घर के आप पर ईमान लाए। कुफ़्फ़ार की हलाकत के बाद कई सौ साल ह़यात रहे। आप आदमे सानी हैं, आप के वक़्त में बहन भाई का निकाह़ ह़राम हुवा। आप की क़ब्र शरीफ़ मक़ामे करक अ़लाक़ए शाम में है। आप उस वक़्त के तमाम ज़मीन वाले इन्सानों के नबी थे।

(तफ़्सीरे नूरुल इ़रफ़ान, स. 260-446-478 मुल्तक़त़न व ब तग़य्युर)

﴾6﴿ नूह़ عَلَيْهِ السَّلَام की कश्ती हुज़ूर صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के ज़माने शरीफ़ तक जूदी पहाड़ पर रही ह़ालांकि आप में और हमारे हुज़ूर (صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) में तीन हज़ार नौ सौ चौहत्तर (3974) साल का फ़ासला है। (तफ़्सीरे नूरुल इरफ़ान, स. 478)

﴾7﴿ इस्लाम में किसी जानदार को ज़िन्दा जलाना मनअ़ है।

(तफ़्सीरे नूरुल इरफ़ान, स. 479)

﴾8﴿ मोमिन को जो **अल्लाह** से मह़ब्बत है वोह मौत के बाद और ज़ियादा हो जाती है। मोमिनीन की दोस्तियां मौत से ख़त्म नहीं होतीं बल्कि बढ़ जाती हैं और आख़िरत में काम आती हैं।

(तफ़्सीरे नूरुल इरफ़ान, स. 821 ब तग़य्युरे क़लील)

﴾9﴿ ह़ज़रते लूत़ عَلَيْهِ السَّلَام ह़ज़रते इब्राहीम عَلَيْهِ السَّلَام के भतीजे या भांजे थे, हारान के फ़रज़न्द थे। ह़ज़रते इब्राहीम पर सब से पहले ह़ज़रते लूत़ عَلَيْهِ السَّلَام ईमान लाए। (तफ़्सीरे नूरुल इरफ़ान, स. 480)

﴾10﴿ हिजरत सुन्नते अम्बिया है। (तफ़्सीरे नूरुल इरफ़ान, स. 480)

﴾11﴿ ह़ज़रते इब्राहीम عَلَيْهِ السَّلَام के फ़रज़न्द ह़ज़रते इस्माईल (और) मदयन व मदाइन भी हैं। (तफ़्सीरे नूरुल इरफ़ान, स. 480)

﴾12﴿ क़ियामत तक क़ुत़्बुल अक़्ताब सय्यिद होगा, येह दर्जा रब ने हुज़ूर (صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) की औलाद के साथ ख़ास कर दिया। हुज़ूरे ग़ौसे पाक (शैख़ अ़ब्दुल क़ादिर जीलानी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه) ह़सनी हुसैनी सय्यिद हैं।

(तफ़्सीरे नूरुल इरफ़ान, स. 480)

﴾13﴿ लिवात़त (Sodomize) क़ौमे लूत़ से पहले किसी ने न की और कोई जानवर भी येह काम नहीं करता, लूत़ी आदमी जानवरों से बदतर है। लूत़ी आदमी आख़िरे कार औ़रत के क़ाबिल नहीं रहता।

(तफ़्सीरे नूरुल इरफ़ान, स. 480)

﴾14﴿ अख़्लाक़ दुरुस्त करने के काफ़िर भी मुकल्लफ़ (यानी पाबन्द) हैं कि इस पर उन को ह़ाकिमे इस्लाम सज़ा दे सकता है।

(तफ़्सीरे नूरुल इरफ़ान, स. 821)

﴾15﴿ फ़िरिश्तों का इ़ल्म नबी के इ़ल्म से ज़ियादा नहीं होता।

(तफ़्सीरे नूरुल इरफ़ान, स. 481)

﴾16﴿ शैत़ान ख़ुद बुरे कामों को अच्छा नहीं जानता मगर लोगों को अच्छा कर के दिखाता है वोह ख़ुद मुश्रिक नहीं, लोगों को मुश्रिक बनाता है।

(तफ़्सीरे नूरुल इरफ़ान, स. 821)

﴾17﴿ नबिय्ये (करीम) صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि जब अहले किताब तुम पर तौरैत वग़ैरा का कोई मज़्मून बयान करें तो न उन की तस्दीक़ करो न तक्ज़ीब बल्कि यूं कह दो कि हम **अल्लाह** तआ़ला और उस की किताबों पर ईमान लाए। (مشکاۃ، 1/51، حدیث:155) (तफ़्सीरे नूरुल इरफ़ान, स. 483)

﴾18﴿ क़ुरआन के काग़ज़ को गन्दा आदमी नहीं छू सकता तो क़ुरआन वाले सीने को गन्दा शैत़ान اِنْ شَآءَاللّٰه न छूएगा। (तफ़्सीरे नूरुल इरफ़ान, स. 822)

﴾19﴿ हुज़ूर (صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) के मोजिज़ात तीन क़िस्म के हैं : एक वोह जो बिग़ैर इख़्तियार हर वक़्त आप से सादिर होते हैं जैसे जिस्मे पाक का साया न होना या पसीना मुबारक से मुश्को अ़म्बर की ख़ुश्बू। बाज़ वोह जिन के ज़ाहिर करने में हुज़ूर (صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) को इख़्तियार न दिया गया जैसे क़ुरआनी आयात। बाज़ वोह जो हुज़ूर (صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) के इख़्तियार से सादिर हुए जैसे कन्कर, पथ्थरों से कलिमा पढ़ाना, चांद फाड़ना, सूरज लौटाना। (तफ़्सीरे नूरुल इरफ़ान, स. 822)

﴾20﴿ सूफ़ियाए किराम رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْهِم फ़रमाते हैं कि ग़ाफ़िल की मौत अचानक है अगर्चे बहुत बीमारी के बाद हो क्यूंकि वोह वहां (यानी आख़िरत) की तय्यारी नहीं करता। आ़क़िल (अ़क़्ल मन्द) मोमिन की मौत

अचानक नहीं अगर्चे सोते में हार्ट फ़ेल हो जाए क्यूंकि वोह हमेशा मौत के लिये तय्यार रहता है। (तफ़्सीरे नूरुल इरफ़ान, स. 484)

﴾21﴿ मोमिन गुनाहगार अगर्चे दोज़ख़ में जाए मगर उसे अ़ज़ाब घेरेगा नहीं, उस की पेशानी, दिल, सज्दे के आज़ा महफ़ूज़ रहेंगे क्यूंकि अ़ज़ाब का घेरना काफ़िर का अ़ज़ाब है। (तफ़्सीरे नूरुल इरफ़ान, स. 484)

﴾22﴿ उ़लमा फ़रमाते हैं कि सिर्फ़ तीन हैवान रिज़्क़ जम्अ़ करते हैं : च्यूंटी, चूहा, इन्सान। येह खाते कम हैं, फ़िक्र ज़ियादा करते हैं, उन के सिवा कोई जानवर रोज़ी जम्अ़ नहीं करता, हालांकि बाज़ जानवर रोज़ाना बहुत खाते हैं जैसे हाथी, गेंडा वग़ैरा। (तफ़्सीरे नूरुल इरफ़ान, स. 485)

﴾23﴿ काफ़िर की अमीरी क़हर है मोमिन की फ़क़ीरी रह़मत है।

(तफ़्सीरे नूरुल इरफ़ान, स. 485)

﴾24﴿ लोग तीन क़िस्म के हैं : (1) मुसीबत में रब की याद करने वाले (2) बाज़ ऐ़श में और (3) बाज़ हर ह़ाल में। तीसरी क़िस्म के लोग आ़क़िल (यानी अ़क़्लमन्द) हैं, पहले दोनों ग़ाफ़िल, कुफ़्फ़ार पहली क़िस्म के ग़ाफ़िल थे कि मुसीबत में रब की याद करते थे आराम में कुफ़्र।

(तफ़्सीरे नूरुल इरफ़ान, स. 823)

﴾25﴿ वोह मोमिन ख़ुश नसीब है जिसे मदीनए त़य्यिबा में क़ब्र नसीब हो जाए। (तफ़्सीरे नूरुल इरफ़ान, स. 823)

"सूरतुर्रूम" से ह़ासिल होने वाली 18 ख़ूबसूरत बातें

﴾1﴿ अगर हम ने अपनी ज़िन्दगी का मक़्सद पूरा कर दिया तो हम ज़िन्दा हैं वरना मुर्दों से बदतर। (तफ़्सीरे नूरुल इरफ़ान, स. 487)

﴾2﴿ मर्दूदों की उजड़ी बस्तियों को जा कर देखना ताकि ख़ौफ़े इलाही पैदा हो और मह़बूबों के आबाद मक़ामों को जा कर देखना ताकि इस से उम्मीद पैदा हो जाइज़ है इस के लिये सफ़र मुबाह़ है। (तफ़्सीरे नूरुल इरफ़ान, स. 487)

﴾3﴿ काफ़िर का खाना, पीना, चलना फिरना, ज़ुल्म है कि रब की बग़ावत कर के उस की चीज़ों को इस्तिमाल करता है, मोमिन के येह काम इबादत हैं कि वोह रब तआ़ला का मुत़ीअ़ है। (तफ़्सीरे नूरुल इरफ़ान, स. 487)

﴾4﴿ सूफ़ियाए किराम (رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهِمْ) फ़रमाते हैं : जो सुन्नत का तारिक (यानी छोड़ने वाला) होगा वोह एक दिन फ़र्ज़ का तारिक भी हो जाएगा और जो फ़र्ज़ छोड़ने का आ़दी होगा वोह आख़िर कार अ़क़ीदे भी छोड़ बैठेगा। चोर पहले पहली दीवार तोड़ता है वहां कामयाब हो कर दूसरी दीवारों में नक़ब लगाता है लिहाज़ा दीन की पहली दीवार सुन्नत है इस की हिफ़ाज़त करो ! वरना बाक़ी चीज़ों की ख़ैर नहीं। (तफ़्सीरे नूरुल इरफ़ान, स. 487)

﴾5﴿ क़ियामत में कैसी ही शिद्दत हो मगर मोमिन की आस न टूटेगी, उसे नबी की शफ़ाअ़त, रब की रह़मत से उम्मीद होगी। (तफ़्सीरे नूरुल इरफ़ान, स. 823)

﴾6﴿ (**अल्लाह** पाक) जानदार से बेजान नुत़्फ़ा या अन्डा पैदा फ़रमाता है और मोमिन से काफ़िर, मुत्तक़ी से फ़ासिक़, आ़क़िल से ग़ाफ़िल को पैदा करता है और नुत़्फ़ा या अन्डे से जानदार हैवान। काफ़िर से मोमिन, ग़ाफ़िल से आ़क़िल, फ़ासिक़ से मुत्तक़ी बन्दे पैदा फ़रमाता है, कैसी शान वाला है।

(तफ़्सीरे नूरुल इरफ़ान, स. 488)

﴾7﴿ इन्सान का निकाह़ जानवर और जिन्न वग़ैरा से नहीं (हो सकता) क्यूंकि बीवी अपनी जिन्स की चाहिये। हूर अगर्चे इन्सान यानी आदम عَلَيْهِ السَّلَام की औलाद में नहीं मगर जन्नत दूसरी दुन्या है, वहां के अह़काम जुदागाना हैं, इसी लिये आदम عَلَيْهِ السَّلَام की बीवी उस वक़्त (दुन्या में तशरीफ़ लाने से पहले) जन्नत में सिर्फ़ ह़व्वा थीं। (तफ़्सीरे नूरुल इरफ़ान, स. 488)

﴾8﴿ मर्द रोज़ी कमाने के लिये है, औ़रत मर्द को आराम देने के लिये।

(तफ़्सीरे नूरुल इरफ़ान, स. 823)

﴾9﴿ क़ुदरती तौ़र पर ख़ावन्द व बीवी में आपस में महब्बत होती है अगर्चे पहले अजनबी हों बल्कि निकाह़ से दो ख़ानदान और कभी दो मुल्क मिल जाते हैं इस लिये उसे निकाह़ यानी मिलाने वाली चीज़ कहते हैं। मर्द को बीवी के अ़ज़ीज़ों से और औ़रत को ख़ावन्द के अ़ज़ीज़ों से महब्बत होना **अल्लाह** की रह़मत है, ना इत्तिफ़ाक़ियां **अल्लाह** का अ़ज़ाब।

(तफ़्सीरे नूरुल इरफ़ान, स. 823)

﴾10﴿ मख़्लूक़ की इब्तिदा आहिस्तगी से (छे दिन में) मगर इआ़दा (यानी दोबारा पैदा करना) अचानक होगा। (तफ़्सीरे नूरुल इरफ़ान, स. 489)

﴾11﴿ हर बच्चा उस तौह़ीद और दीन पर पैदा होता है जिस का उस ने मीसाक़ के दिन अ़हद किया था। (तफ़्सीरे नूरुल इरफ़ान, स. 490)

﴾12﴿ बहुत दफ़्आ़ मुसीबत के वक़्त कुफ़्फ़ारे मक्का हुज़ूर (صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) की ख़िदमत में ह़ाज़िर हो कर रब तआ़ला से दुआ़ कराते थे। फ़िरऔ़न भी मुसीबतों में मूसा عَلَيْهِ السَّلَام से दुआ़ कराता था।

(तफ़्सीरे नूरुल इरफ़ान, स. 490)

﴾13﴿ जिस हिबा (यानी तोह़फ़े) में महज़ रब की रिज़ा मक़्सूद हो वोह सदक़ा है और जिस में बन्दे की रिज़ा मक़्सूद हो और रब की रिज़ा के लिये बन्दे को राज़ी करना हो वोह हदिया या नज़राना है।

(तफ़्सीरे नूरुल इरफ़ान, स. 491)

﴾14﴿ ख़ैरात वोह है जो फ़क़ीर को फ़क़ीरी की बिना पर महज़ रब को राज़ी करने के लिये दी जाए। फ़क़ीर को हदिया देना सदक़ा है जैसे कि अमीर को सदक़ा देना हिबा (यानी तोह़फ़ा) है। सदक़ए जारिया अमीर व ग़रीब सब इस्तिमाल कर सकते हैं, सदक़ए वाजिबा सिर्फ़ फ़क़ीर खाएं। सदक़ए नफ़्ल फ़क़ीर ही के लिये मौज़ूं व मुनासिब है। (तफ़्सीरे नूरुल इरफ़ान, स. 491)

﴾15﴿ कुफ़्र और गुनाहों की वज्ह से क़ह्त़ साली, बीमारी, वबाई अमराज़, सैलाब, आग लगना, रिज़्क़ में बे बरकती होती है और बारिश न होने से दरियाई जानवर अन्धे हो जाते हैं, सीप में मोती नहीं बनते। ग़रज़ येह कि गुनाहों से ख़ुश्की और दरियाई मख़्लूक़ को मुसीबत आ जाती है। आज कल जंगलों में ख़ुश्की और समुन्दर सब जगह ही आफ़त होती है।

(तफ़्सीरे नूरुल इरफ़ान, स. 491)

﴾16﴿ इन्सान की बद अ़मली से कभी जानवरों पर भी मुसीबत आ जाती है। गन्दुम के साथ घुन भी पिस जाते हैं जैसे कभी जानवरों की वज्ह से हम पर बारिश हो जाती है, कसरते ज़िना से क़त्लो ग़ारत होती है, ज़कात न देने से बारिश रुकती है, कम तोलने से ह़ाकिम ज़ालिम मुक़र्रर होते हैं, सूद ख़ोरी से ज़ल्ज़ले वग़ैरा आते हैं। (तफ़्सीरे नूरुल इरफ़ान, स. 491)

﴾17﴿ **अल्लाह** पाक इरशाद फ़रमाता है : तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : "और हमारे ज़िम्मए करम पर है मुसलमानों की मदद फ़रमाना" (پ21، الروم:47)

मोमिनों की मदद होने की चन्द सूरतें हैं : मुनाज़रे में उन्हें फ़त्ह़ नसीब होना। जब मोमिन मुसीबत में गिरिफ़्तार हों तो रब का उन्हें अपने पास बुला लेना, दुश्मनों के हाथ में न छोड़ना, लिहाज़ा इमामे हुसैन رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ मन्सूर व मुज़फ़्फ़र (यानी मदद दिये गए कामयाब) हैं, यज़ीद पलीद ख़ाइबो ख़ासिर (यानी नाकाम और ना मुराद) था।

(तफ़्सीरे नूरुल इरफ़ान, स. 492)

﴾18﴿ इन्सान बुढ़ापे में जिस्मानी त़ौर पर कमज़ोर हो जाता है और अ़क़्ली त़ौर पर भी कि तमाम आज़ा कमज़ोर हो जाते हैं। अच्छा ख़ासा (दुन्यावी) पढ़ा लिखा आदमी बे वुक़ूफ़ हो जाता है। इस से मालूम होता है कि हम सब किसी और के क़ब्ज़े में हैं। (तफ़्सीरे नूरुल इरफ़ान, स. 493)

''सूरतुल्लुक़्मान'' से ह़ासिल होने वाली 9 ख़ूबसूरत बातें

﴾1﴿ तिलावते कुरआन का सुनना फ़र्ज़े किफ़ाया है । जहां लोग कुरआन शरीफ़ सुनने से मजबूर हों, कारोबार में मश्गूल हों वहां बुलन्द आवाज़ से तिलावत न करनी चाहिये । (तफ़्सीरे नूरुल इरफ़ान, स. 825)

﴾2﴿ तारिख़ ह़ज़रते इब्राहीम عَلَيْهِ السَّلَام के वालिद हैं । आप की उ़म्र एक हज़ार साल हुई और दाऊद عَلَيْهِ السَّلَام की सोह़बत पाई ।

(तफ़्सीरे नूरुल इरफ़ान, स. 495)

﴾3﴿ ह़ज़रते लुक़्मान के बेटे का नाम अन्अ़म या अश्कम है ।

(तफ़्सीरे नूरुल इरफ़ान, स. 495)

﴾4﴿ ह़ज़रते सुफ़्यान इब्ने उ़यैना (رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه) ने फ़रमाया कि **अल्लाह** के शुक्र के लिये पंजगाना नमाज़ पढ़ो, मां बाप के शुक्रिया के लिये नमाज़ों में उन के लिये दुआ़ए मग़्फ़िरत करो । (तफ़्सीरे नूरुल इरफ़ान, स. 825)

﴾5﴿ अच्छों की सी शक्ल बनाना, उन की सी चाल ढाल इख़्तियार करना अच्छा है और बुरों की शक्ल इख़्तियार करना उन के त़रीक़े बरतना बुरा है इस से मौजूदा मुसलमानों को इ़ब्रत पकड़नी चाहिये कि अपनी चाल ढाल मुतकब्बिर ईसाइयों की सी बनाते हैं । मुतकब्बिरीन की नक़्ल भी बुरी है । मुतवाज़िईन की नक़्ल अच्छी है । आज कल बालों में मांग निकाल कर नंगे सर हाथ या पैर घुमाते हुए चलना ख़ास कर मुतकब्बिरीन की चाल है, हर मुसलमान को इस से बचना चाहिये । बिला वज्ह तेज़ चलना भी इस में दाख़िल है कि तकब्बुर है । (तफ़्सीरे नूरुल इरफ़ान, स. 496)

﴾6﴿ अन्दरूनी अ़ज़मत पर अकड़ना फ़ख़्र है जैसे इ़ल्म, ह़ुस्न, ख़ुश आवाज़ी, नसब, वाज़ वग़ैरा और बैरूनी अ़ज़मत पर अकड़ना इख़्तियाल (तकब्बुरो

गुरूर) है जैसे माल, जायदाद, लश्कर, नौकर चाकर वग़ैरा यानी न ज़ाती कमाल पर फ़ख़्र कर, न बैरूनी फ़ज़ाइल पर इतरा क्यूंकि येह चीज़ें तेरी अपनी नहीं रब की हैं, जब चाहे ले ले। (तफ़्सीरे नूरुल इरफ़ान, स. 825)

﴾7﴿ मुर्ग बुलन्द आवाज़ से **अल्लाह** का ज़िक्र करता है अच्छा मालूम होता है, उस वक़्त दुआ मांगने का हुक्म है। (तफ़्सीरे नूरुल इरफ़ान, स. 825)

﴾8﴿ सूफ़िया फ़रमाते हैं कि हम सब लोग पस्ती (यानी घाटे व ख़सारे) में पड़े हैं। हुज़ूर (صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) **अल्लाह** तआ़ला की मज़बूत रस्सी हैं जिस ने आप का दामन थाम लिया वोह बुलन्दी पा गया जो आप से अ़लाहदा रहा पस्ती में रहा। जैसे कुंवें में गिरे हुए डोल या आदमी को रस्सी के ज़रीए़ निकालते हैं। (तफ़्सीरे नूरुल इरफ़ान, स. 497)

﴾9﴿ दुन्या की ज़िन्दगी को बाक़ी समझ कर रब से ग़ाफ़िल हो जाना बड़ी ही ग़फ़्लत है, येह तो पानी के बुल्बुले की त़रह़ ख़ाली ग़िलाफ़ है जिस की कुछ ह़क़ीक़त नहीं। (तफ़्सीरे नूरुल इरफ़ान, स. 826)

नूरुल इरफ़ान के मदनी फूलों पर काम का अन्दाज़

"तफ़्सीरे नूरुल इरफ़ान" से मदनी फूलों के रसाइल तय्यार करने के लिये नईमी कुतुब ख़ाने का मत़बूआ़ नुस्ख़ा, नम्बर (N163) पर काम किया गया है। नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के नाम और लक़ब शरीफ़ के साथ दुरूदे पाक, अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ السَّلَام के साथ सलाम, सह़ाबए किराम (رَضِیَ اللهُ عَنْهُم) और औलियाए किराम (رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهِم) के ज़िक्र के वक़्त तरज़्ज़ी व तरह़ीम (यानी رَضِیَ اللهُ عَنْه और رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه) का इज़ाफ़ा किया गया है। हर मदनी फूल के बाद ह़वाला दिया गया है। मुश्किल अल्फ़ाज़ के माना

ब्रैकेट में पेश किये गए हैं और बाज़ मक़ामात पर मुश्किल अल्फ़ाज़ के तलफ़्फ़ुज़ और एराब का इज़ाफ़ा किया गया है। ज़रूरतन अंग्रेज़ी अल्फ़ाज़ भी शामिल किये गए हैं। पुरानी उर्दू के बाज़ अल्फ़ाज़ या जुम्लों को मुरव्वजह (यानी आज कल बोली जाने वाली) उर्दू के एतिबार से कुछ आसान करने की कोशिश की गई है। चन्द मक़ामात पर मुश्किल मदनी फूलों को ख़ुलासतन बयान किया गया है, कुछ मक़ामात पर अक़्वाल की हेडिंग्ज़ दी गई हैं ताकि पढ़ने वालों के लिये अक़्वाल की अहमिय्यत मज़ीद बढ़े। मुफ़्ती साहिब رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه ने कई मक़ामात पर तफ़्सीरी निकात बयान करते हुए ज़िम्नन अहादीसे मुबारका बयान की हैं, पढ़ने वालों के ज़ौक़ के लिये उन अहादीसे मुबारका की तख़रीज भी की गई है। चन्द मवाक़ेअ़ पर मौज़ूअ़ की मुनासबत से पढ़ने वालों को नेकियों की तरग़ीब दिलाने वग़ैरा के इफ़ादात शोबा “हफ़्तावार रिसाला मुतालआ” की तरफ़ से शामिल किये गए हैं।

सिर्फ़ ऐसे निकात (मदनी फूलों) को बाक़ी रखा गया है जो जुदागाना तौर पर एक क़ौल हैं। ऐसे अक़्वाल जिन को समझने के लिये आयते मुबारका की ज़रूरत हो उन्हें रिसाले में शामिल न करने की कोशिश की गई है।

अगले हफ़्ते का रिसाला

DAWATE ISLAMI INDIA

FGN Channel
Dekhte Rahiye

MAKTABATUL MADINA INDIA

Delhi : 421, Urdu Market, Matia Mahal, Jama Masjid, Delhi-110006 +91-8178862570

Mumbai : 19/20, Mohammad Ali Road, Opp. Mandavi Post Office, Mumbai-400003 +91-9320558372

Ahmedabad : Faizane Madina, Tinkonia Bagicha, Mirzapur, Ahmedabad-380001 +91-9327168200

Nagpur : Opp. Garib Nawaz Masjid, Saifi Nagar Road, Mominpura, Nagpur-440018 +91-9326310099

www.maktabatulmadina.in feedbackmmhind@gmail.com

For Home Delivery of Books Please Contact on (T&C Apply) +91-9978626025